कलीसिया। अध्याय 17

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उसके मार्गदर्शन के लिए, उसकी उपस्थिति के लिए, और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया का निर्माण करने के विषय में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर को समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[चुना हुआ समय]* **इफिसियों 6 और फिलिप्पियों 1 - 2**

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (इफिसियों 6 और फिलिप्पियों 1 - 2) में से अपने शान्त समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके एक-दूसरे के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।
जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह के लिए तैयारी]* **(5) मत्ती 6:33**

दो-दो करके ***समीक्षा*** करें।
(5) उचित प्राथमिकताएँ : मत्ती 6:33 - इसलिए पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[कलीसियाई रीति]* *कलीसियाई अगुवों की नियुक्ति*

प्रस्तावना। नियमावली 3, पाठ 34 (बाइबल अध्ययन 1 पतरस 5:1-7), नियमावली 4, अध्याय 47 (शिक्षा : एक मसीही अगुवे की विशेषताएँ) और नियमावली 4, परिशिष्ट 20 (शिक्षा : सेवक/डीकन) को देखें। यह शिक्षा कलीसिया के अगुवों को अधिकार देने के विषय में है, अर्थात्, प्राचीनों (याजक/पादरी/पास्टर/कलीसिया के अगुवों सहित) के अधिकार (नियुक्ति, प्रवर्तन, अभिषेक)। याद रखें, एक मण्डली कई घरों की संगति (घर में कलीसिया) हो सकती है जो कलीसिया के प्राचीनों के अधीन काम करती हैं।

अगुवों को नियुक्त करके "एक सेवकाई" उन्हें दी जाती है। "एक सेवकाई या कार्यालय" (यह शब्द पुर्तगाली भाषा में "एक व्यापार" से सम्बन्धित है) बाइबल में यह एक सार्वजनिक कार्य या सेवकाई है जिसके लिए मसीह और कलीसिया के प्राचीन एक व्यक्ति को बुलाकर नियुक्त (शामिल) करते हैं। सेवकाई के उदाहरण : प्राचीनों (याजक), मिशनरी (प्रेरित), प्रचारक (भविष्यद्वक्ता), पासबान (चरवाहा), सुसमाचारक, शिक्षक, सह-पासबान, समूह का अगुवा, युवाओं का अगुवा इत्यादि हैं। इन प्राचीनों की सेवकाई के अलावा यह सेवकाई मण्डली के अगुवों की नहीं, बल्कि वे प्राचीनों की समिति (परिषद) के तहत अपने कार्यों को करते हैं!

यह एक सेवकाई है जो विशेष कार्यों को करती है और जिस पर उत्तरदायी, अधिकार और विश्वास किया जाता है, और में जवाबदेही भी होती है। यह अन्य मसीहियों के ऊपर अधिकार जताना नहीं है, क्योंकि बाइबल में अगुवाई हमेशा उन

व्यक्तियों के विपरीत अगुवाई और सेवकों की अगुवाई को दर्शाता है जो सिर्फ अधिकारी बनकर चीज़ों को नियन्त्रित करना चाहते हैं।

हम सबसे पहले अनिवार्य आवश्यकताओं और कलीसिया के प्राचीनों के कार्यों को संक्षेप में देखेंगे और फिर जानेंगे कि कलीसिया में अगुवों के रूप में उन्हें कैसे चुना जाना और नियुक्त किया जाना चाहिए (नियुक्त करना, शामिल करना)।

क. प्राचीनों की बाइबल पर आधारित योग्यता

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:6-9
खोजें और चर्चा करें। प्राचीनों के लिए बाइबल की आवश्यकताएँ या योग्यताएँ क्या हैं?

ध्यान दें। जब कोई व्यक्ति बाइबल की निम्नलिखित आवश्यकताओं को पूरा करता है तब वह उन्हें प्राचीनों के रूप में चुना और नियुक्त किया जाता है।
प्राचीनों की योग्यताओं को तीन भागों में विभाजित किया सकता है:

1. उसका व्यक्तिगत व्यवहार।

अपनी इच्छाओं, भावनाओं और स्वभाव के सम्बन्ध में, उसे आत्म-नियंत्रित होना चाहिए। धन के सम्बन्ध में, उसे ईमानदार होना चाहिए और पृथ्वी पर अपनी संपत्ति को इकट्ठा नहीं करना चाहिए।

2. उसका पारिवारिक जीवन।

महिलाओं के सम्बन्ध में, उसे अपनी पत्नी के प्रति विश्वास का एक उदाहरण होना चाहिए। यदि वह अविवाहित है, तो उसे सभी महिलाओं के प्रति शुद्धता का उदाहरण होना चाहिए। अपने बच्चों के सम्बन्ध में, उसे विश्वास करने और मसीह का पालन करने और अपने माता-पिता का सम्मान करने के लिए उनकी अगुवाई करनी चाहिए।

3. उसकी सेवकाई की क्षमताएँ।

परिपक्वता के सम्बन्ध में, वह हाल ही में परिवर्तित या अपरिपक्व मसीही नहीं होना चाहिए। बाइबल के सम्बन्ध में, उसे मसीही खरे उपदेशों को सुनाना होगा और लोगों को प्रचार करने, सिखाने और मार्गदर्शन करने के लिए बाइबल का उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए।

ख.प्राचीनों के बाइबल सम्बन्धी कार्य

1. प्राचीनों का पहला कार्य चरवाहा या परमेश्वर के झुण्ड का पासबान होना है।

पढ़ें प्रेरितों के काम 20:28-31; 1 पतरस 5:2
खोजें और चर्चा करें। कलीसिया का चरवाहा, पासबान और रखवाला होने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। प्राचीनों को कलीसिया के पासबान या चरवाहों (Greek: poimenas) और रखवालों (Greek: episkopoi, bishops) के रूप में नियुक्त किया जाता है, जैसे कि यीशु मसीह विश्वव्यापी की कलीसिया का अच्छा चरवाहा, मुख्य चरवाहा और रखवाला है (बिशप) (1 पतरस 2:25; भजन 23)। एक समूह के रूप में एक साथ मिलकर प्राचीनों को कलीसिया के सदस्यों की चरवाही (Greek: poimainó) और रखवाली (Greek: episkopeó) करनी चाहिए, जैसे की उन्हें तृप्त करना, उनकी रक्षा करना, देखभाल और अगुवाई करना ताकि वे बढ़ सकें। साथ में प्राचीन निर्बल और ज़रूरतमन्द सदस्यों (विधवाओं, अनाथों, शरणार्थियों और नए विश्वासियों) के प्रति उत्तरदायी हैं (1 तीमुथियुस 5:16)। साथ ही में वे बीमारों के लिए प्रार्थना करते हैं (याकूब 5:14-15)। साथ में वे झूठे शिक्षकों, अधिकारियों और भेड़ियों के विरूद्ध उनकी सुरक्षा करते हैं जो झुण्ड की भेड़ों को भटकाने की कोशिश करते हैं (प्रेरितों के काम 20:29-31)। प्रत्येक प्राचीन अन्य प्राचीनों का भी रखवाला है (प्रेरितों के काम 20:28)। इस तरह अगुवों सहित सभी मसीही लोग एक दूसरे के प्रति उत्तरदायित्व और जवाबदेही के सम्बन्ध में खड़े हैं। प्राचीनों को अपने काम दूसरों पर अधिकार जताकर नहीं बल्कि एक सेवक के रूप में करना चाहिए (तुलना करें - यूहन्ना 13:12-16 में पैर धोना)। बाइबल में किसी भी मण्डली का सिर्फ एक ही पासबान नहीं था। प्राचीनों के समिति में सभी प्राचीन कई अलग-अलग पासबान के कर्तव्यों के साथ चरवाहें/पासबान हैं।

2. प्राचीनों का दूसरा कार्य परमेश्वर के घर का प्रबन्धक होना है।

पढ़ें 1 थिस्सलुनिकियों 5:12-15; 1 तीमुथियुस 3:5; 5:17; तीतुस 1:7
खोजें और चर्चा करें। मण्डली का प्रबन्धक (भण्डारी) होने का क्या मतलब है?

ध्यान दें। प्राचीनों को अगुवों (Greek: prohistamenoi) और कलीसिया के प्रबन्धकों (Greek: oikonomoi) के रूप में नियुक्त किया जाता है। एक समूह के रूप में प्राचीन विशेष रूप से कलीसिया की गतिविधियों और संपत्तियों को एक घर के रूप में (Greek: prohistémi) प्रबन्धित करते हैं (Greek: oikos)। यह प्राचीनों का काम है, न कि सेवकों का।

- थिस्सलुनीकियों और तीमुथियुस में, प्राचीनों के काम को "आगे बढ़कर" या "उदाहरण स्थापित करने" (Greek: prohistémi) के लिए "नियम, प्रत्यक्ष या प्रबन्धन" के रूप में वर्णित किया गया है।
- तीतुस में, प्राचीनों के कार्य को "घर के एक प्रबंधक, या प्रशासक" (Greek: oikos) के रूप में वर्णित किया गया है।

हालाँकि, प्राचीनों की अगुवाई शैली का अर्थ उन लोगों पर आदेश चलाना नहीं है जिन्हें उन्हें सौंपा गया है। उन्हें उदाहरण के आधार पर अगुवाई करना चाहिए (1 पतरस 5:2-3)। यदि कोई प्राचीन अपने परिवार को अच्छी तरह से प्रबन्धित नहीं करता है (1 तीमुथियुस 3:4-5) या उसे अपनी पत्नी या बच्चों पर अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है, तो उसे अपनी प्राथमिकता को बदलना चाहिए या अपने परिवार को जो कुछ चाहिए उसे देने के लिए उसे एक प्राचीन के रूप में इस्तीफा देना चाहिए। उसकी सभी ज़िम्मेदारियों के सम्बन्ध में उसके जीवन में संतुलन होना चाहिए।

लोगों और गतिविधियों के सम्बन्ध में निम्नलिखित कार्य प्राचीनों की अगुवाई और प्रबन्धन के अधीन आते हैं। बेशक प्राचीनों को कलीसिया के सदस्यों को कुछ काम सौंपना होगा, लेकिन प्राचीन इन कार्यों के लिए परमेश्वर और प्राचीनों की समिति के प्रति उत्तरदायी होते हैं!

(1) प्राचीन कलीसिया की सभाओं की अगुवाई करते हैं।

वे साप्ताहिक सभाओं जैसे आराधना सभा और बाइबल अध्ययन, प्रार्थना और संगति के लिए समूहों में छोटी सभाओं को प्रोत्साहित करते हैं (प्रेरितों 2:42)। वे सदस्यों को प्रोत्साहन देने के लिए बपतिस्मा, प्रभु-भोज, कलीसियाई उत्सव, विवाह, अंतिम-संस्कार, परिवारों में भेंट करना, विशेष सभाओं का आयोजन व उनकी अगुवाई करते हैं।

(2) प्राचीन कलीसिया के सेवकाई कार्य की अगुवाई करते हैं।

वे सदस्यों को संसार में लोगों के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करते हैं (1 तीमुथियुस 2:1-2), ताकि समाज में अच्छा प्रभाव हो सकें (मत्ती 5:14-16) और साथ ही परिवार के अन्दर और बाहर सुसमाचार प्रचार होने पाए, (मत्ती 10:32-37; प्रेरितों के काम 5:42)। वे अन्य प्रान्तों और देशों के मिशनकार्य को बढ़ावा देते हैं। वे उन कलीसियाओं और अन्य मसीही संगठनों का समर्थन करते हैं जिन्हें प्रताड़ित और सताया जाता हैं (रोमियों 15:23-24; फिलिप्पियों 1:5; 4:15-16; 3 यूहन्ना 5-8) (पढ़ें 2 कुरिन्थियों 8)।

(3) प्राचीन कलीसिया के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अगुवाई करते हैं।

वे मण्डली को अंगीकार और बपतिस्मा के लिए तैयार करने में उनकी अगुवाई करते हैं। वे नए विश्वासियों की सारी जानकारी लेते रहते हैं और यह भी देखते हैं कि कलीसिया के सभी सदस्यों को मसीह के शिष्य बनाए और वे दुनिया भर में विभिन्न प्रकार की सेवकाई करने के लिए मसीह की देह से सुसज्जित हों (इफिसियों 4:11-14)। वे निम्नलिखित समूहों में अगुवों के प्रशिक्षण का ख्याल रखते हैं : जिसमें सुसमाचार, शिष्य बनाना, मिशन कार्य, सन्डे स्कूल, किशोर व युवा क्लब, पासबानी सम्बन्धी देखभाल, गरीब राहत कार्य व अन्य समूह हैं।

(4) प्राचीनों का काम यह भी है कि वे देखे कि सदस्य भली रीति से काम करें।

वे सदस्यों को आपसी सम्बन्ध में प्रेम रखने, गतिविधियों में भले काम करने और पारस्परिक सभाओं में ईमानदारी (इब्रानियों 10:24-25) रखने के लिए उत्साहित करते हैं। वे सदस्यों को मसीह के कार्य करने के लिए जो मसीह ने अपने प्रतिभाओं और आत्मिक वरदानों के रूप में उन्हें दिए हैं, उत्साहित करते हैं। वे सदस्यों को अपनी प्रतिभाओं और आत्मिक वरदानों को खोजने और इनके साथ दूसरों की सेवा करने में उनकी सहायता करते हैं। वे सदस्य के आचरण और वरदानों के सही उपयोग के प्रति उत्तरदायी हैं (रोमियों 12:3-8; 1 कुरिन्थियों 12:4-7; 14:26-40; 1 थिस्सलुनीकियों 5:19-21; 1 तीमुथियुस 4:14; 2 तीमुथियुस 1:6; 1 यूहन्ना 4:1)। वे सदस्यों को व्यक्तिगत सहायता प्रदान करते हैं (प्रेरितों के काम 18:24-28)। वे धैर्यपूर्वक और शिक्षा के माध्यम से सदस्यों को चेतावनी देते हैं, सलाह देते हैं, वे गलत बातों में उन्हें सही व प्रोत्साहित करते हैं (2 तीमुथियुस 4:1-5; तीतुस 2:15)। वे कलीसिया के भीतर आवश्यक पासबानी देखभाल का प्रबन्ध करते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:12-15)। और वे कलीसिया में अनुशासन का ख्याल रखते

हैं (मत्ती 18:15-17; तुलना करें 1 कुरिन्थियों 5:9-13)।

3. प्राचीनों का तीसरा कार्य परमेश्वर के वचन का शिक्षक होना है।

पढ़ें 1 थिस्सलुनीकियों 5:12; 1 तीमुथियुस 3:2; 5:17 और तीतुस 1:9
खोजें और चर्चा करें। मण्डली में परमेश्वर के वचन के शिक्षक होने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। कलीसिया में शिक्षक (Greek: didaskaloi) होने के लिए प्राचीनों को नियुक्त किया जाता है। वे एक समूह के रूप में बाइबल का प्रयोग प्रचार करने, सिखाने, सलाह देने, चेतावनी देने और प्रोत्साहित करने के लिए किया करते हैं।

(1) प्राचीनों के समूह या समिति की ज़िम्मेदारियाँ बाइबल का इस्तेमाल करना है :

- अन्य जातियों और गैर-मसीहियों को परमेश्वर के वचन का प्रचार करना (1 तीमुथियुस 5:17)।
- अन्य जातियों और गैर-मसीहियों के साथ यीशु मसीह के विषय पर चर्चा करना (प्रेरितों 17:1-4,11)।
- परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को कलीसिया के सदस्यों को बताना जैसा कि बाइबल में प्रगट है (प्रेरितों के काम 20:20,27)।
- सदस्यों को यीशु मसीह की आज्ञाओं और शिक्षाओं का पालन करना सिखाना (मत्ती 28:20)।
- सदस्यों के हृदयों में परमेश्वर के वचन की छाप लगाना, विश्वासियों को सलाह देना, भयभीतों को प्रोत्साहित करना, उन लोगों को हिदायत देना जो बेरोजगार हैं और उन लोगों को समझाना जो उनका विरोध करते हैं (कुलुस्सियों 3:16; 1 थिस्सलुनिकियों 5:12-15; 2 तीमुथियुस 2:23-26)।
- शिक्षा तैयार करना (प्रेरितों 15; 2 तीमुथियुस 1:13)
- झूठी शिक्षाओं का खण्डन करना इत्यादि (तीतुस 1:9)।

(2) प्राचीनों को एक धार्मिक संस्थान में प्रशिक्षित नहीं किया जाता या पूर्णकालिक होने के लिए नियुक्त नहीं किया जाता।

नए नियम में प्राचीन आमतौर पर पूर्णकालिक पासबान, प्रचारक या शिक्षक नहीं थे। फिर भी, प्राचीनों को "सिखाने में सक्षम होना चाहिए" (1 तीमुथियुस 3:2) और "विश्वासयोग्य वचन पर जो धार्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे; कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सकें; और विवादियों का मुँह भी बन्द कर सकें" (तीतुस 1:9)!

नए नियम में कुछ प्राचीन मुख्य रूप से प्रचारक और शिक्षक थे (1 तीमुथियुस 5:17), लेकिन बाइबल यह नहीं बतताती कि उन्हें पूर्णकालिक नियुक्त किया गया था! बाइबल धार्मिक धर्मशास्त्र और बाइबल स्कूलों की आधुनिक घटना के बारे में कुछ भी नहीं बताती हैं। बाइबल यह नहीं सिखाती कि केवल प्राचीनों, जिन्हें धार्मिक धर्मशास्त्र या बाइबल स्कूल में औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है, उन्हीं के पास परमेश्वर के वचन का प्रचार और शिक्षा देने का अधिकार या योग्यता है। सभी मसीहियों को दूसरों को परमेश्वर के वचन सिखाने और एक दूसरे को सलाह देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है (कुलुस्सियों 3:16, तुलना करें मत्ती 28:19)।

यद्यपि कुछ मसीहियों को तीमुथियुस और तीतुस जैसे लोगों को एक कलीसिया के आधुनिक पूर्णकालिक पासबान की तरह माना जाता है, लेकिन वे उससे भी अधिक थे। उन्होंने प्रेरित पौलुस के साथ व्यापक रूप से यात्रा की और वो उनका पासबानों होने से भी अधिक उनका सहकर्मी या मिशनरी था! यहाँ तक कि तीमुथियुस और तीतुस को आधुनिक धार्मिक सेमिनारों या बाइबल स्कूलों में भी प्रशिक्षित नहीं किया गया था, लेकिन प्रेरित पौलुस से व्यवहारिक प्रशिक्षण प्राप्त हुआ, जैसे प्रेरितों को यीशु मसीह से व्यवहारिक प्रशिक्षण मिला!

(3) प्राचीन जो उम्र में युवा है उनके पास अधिकार है।

यद्यपि प्राचीनों और युवा पुरुष दोनों के लिए एक दूसरे के प्रति एक विनम्र दृष्टिकोण आवश्यक है (1 पतरस 5:5), उनकी सेवकाई के आधार पर युवा प्राचीनों को मण्डली में सभी सदस्यों, प्राचीनों और यदि आवश्यक हो, तो अधिक उम्र वाले प्राचीनों को सिखाने, सही करने और दण्डित करने का उत्तरदायित्व व अधिकार प्राप्त है (1 तीमुथियुस 1:3-5; 4:11-13; 5:20; 2 तीमुथियुस 2:22-26)। फिर भी, सभी प्राचीनों को एक-दूसरों से सम्मान के साथ व्यवहार करना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2; 5:1-2; तीतुस 1:7)।

4. प्राचीनों का चौथा कार्य परमेश्वर और लोगों का सेवक होना है।

पढ़ें। मत्ती 20:25-28 में यीशु सिखाता है, "तुम जानते हो, कि अन्य जातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और

जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने। जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिये नहीं आया कि उस की सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे।" और 1 पतरस 5:1-3 में प्रेरित पतरस सिखाता है, "तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन ... होकर उन्हें यह समझाता हूँ कि परमेश्वर के उस झुण्ड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो (Greek: poimanate) और यह दबाव से नहीं (Greek: episkopountes), परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर। और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ (Greek: katakurieuó), वरन् झुण्ड के लिये आदर्श बनो।"

खोजें और चर्चा करें। कलीसिया में प्राचीनों का उत्तरदायित्व क्या है?

ध्यान दें। प्राचीनों को सेवक (Greek: diakonoi) के रूप में नियुक्त किया जाता है न कि कलीसिया पर अपना अधिकार जताने के लिए। एक समूह के रूप में प्राचीन सेवक, कलीसिया में छोटे से छोटा कार्य करने में इच्छुक (जैसा कि गंदे पैर धोना) और स्वेच्छा से उन कार्यों को करने के लिए जो दूसरे लोग नहीं करना चाहते हैं या नहीं कर सकते हैं, उनके लिए उदाहरण हैं। वे दूसरों की भलाई के कार्य करने के लिए उत्सुक रहते हैं।

सेवा न केवल एक कार्य/ज़िम्मेदारी है, बल्कि कलीसिया के प्राचीनों के विशिष्ट दृष्टिकोण और जीवनशैली भी है (1 कुरिन्थियों 3:5)! "सेवा" शब्द उनकी सभी ज़िम्मेदारियों का सारांश है और हमेशा प्राचीनों को अपने सदस्यों की चरवाहों के रूप में, उनकी गतिविधियों के प्रबन्धकों के रूप में और परमेश्वर के वचन के शिक्षक के रूप में, दूसरों के ऊपर अधिकार जताने के पद से नहीं, परन्तु अपने सेवक के पद की ज़िम्मेदारियों को पूरा करने की याद दिलाता है! यीशु मसीह विश्वव्यापी कलीसियाओं का मुख्य चरवाहा और अध्यक्ष (1 पतरस 2:25), प्रत्येक मसीही का गुरू और प्रभु (यूहन्ना 13:13) और दुनिया के सभी राजाओं का राजा है (प्रकाशितवाक्य 19:16)। फिर भी, उसने अपने प्रेरितों को, कलीसिया के सभी अन्य अगुवों और दुनिया के सभी अगुवों को सबसे नम्र सेवक होने का उदाहरण दिया, ताकि वे वह कर सके जैसा उसने उनके लिए किया (यूहन्ना 13:14-15)! सेवा (जैसे पैर धोना) प्राचीनों की जीवन का सारांश है और यह संसार अगुवों की अगुवाई-शैली के विपरीत है। लोगों के लिए प्राचीन परमेश्वर के इच्छुक, स्वैच्छिक और उत्सुक सेवक हैं! यीशु मसीह के साथ-साथ प्रेरित पतरस ने मसीहियों के बीच अगुवों को उन लोगों पर प्रभुता करने के लिए मना कर दिया जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें सौंपा था। आदेश देने की बजाय मसीहियों के अगुवों को स्वयं आगे बढ़कर और उदाहरण स्थापित करके उनकी अगुवाई करनी चाहिए। यह मांग करने के बजाय कि सदस्यों को अगुवों की सेवा करनी चाहिए, स्वयं अगुवों को सदस्यों की सेवा करनी चाहिए ताकि वे मसीह के लिए उत्तम बन सकें और मसीह को अपना उत्तम प्रदान कर सकें (मरकुस 10:45; लूका 22:25-27)।

ग. प्राचीनों की नियुक्ति (पासबानों सहित)

प्रस्तावित करें। प्रत्येक कलीसिया को प्राचीनों को चुनने और नियुक्त करने में बाइबल के सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए (कलीसिया के अगुवों, पासबानों, याजक, आदरणीयों, निदेशकों/प्रबन्धकों, शिक्षकों और अन्य कलीसिया के अगुवों सहित)।

1. प्राचीनों को चुनने का आधार।

पढ़ें 1 तीमुथियुस 3:14-15; 3:1-7
खोजें और चर्चा करें। किस आधार पर प्राचीनों को चुना जाना चाहिए?
ध्यान दें। प्राचीनों को बाइबल और उनके प्रदर्शन के आधार पर कलीसिया में चुना जाना चाहिए।

(1) बाइबल

प्राचीनों का चयन बाइबल के कार्यों को करने की उनकी योग्यताओं और क्षमताओं पर आधारित होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9; 1 पतरस 5:1-4)।

(2) व्याख्या

वे लोग, जो अपने जीवन और सेवकाई के द्वारा अपनी अगुवाई की क्षमताओं को प्रदर्शित करते हैं (लूका 16:10) और जिस प्रकार परमेश्वर उनकी सेवा को आशीषित करता है (2 कुरिन्थियों 10:18; फिलिप्पियों 2:22), तो वे प्राचीन बनने के लिए सबसे अच्छे उम्मीदवार हैं। कोई भी कलीसिया में स्वयं को एक प्राचीन (या पासबान) के रूप में नियुक्त नहीं कर सकता है। एक भाई एक प्राचीन के तौर पर सेवा करने के लिए स्वयंसेवक हो सकता है, लेकिन उसे योग्य होना

चाहिए और मण्डली को उसे चुनने और नियुक्त करने के लिए इच्छुक होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:1)।

2. नए नियम की यहूदी कलीसिया में प्राचीनों का चुना जाना।

पढ़ें प्रेरितों के काम 2:42; प्रेरितों के काम 6:1-4; 1 पतरस 5:1; 3 यूहन्ना 1

खोजें और चर्चा करें। नये नियम की यहूदी कलीसिया में प्राचीनों को कैसे चुना गया?

ध्यान दें। पिन्तेकुस्त के बाद नये नियम के समय में, शिष्यों का पहला दल यरूशलेम की पहली स्थानीय कलीसिया के रूप में विकसित हुआ। ज़्यादातर कलीसियाएँ यहूदियों और सामरियों के बीच में से विकसित हुई (प्रेरितों के काम 8:4-5; प्रेरितों के काम 9:31; प्रेरितों के काम 11:19; याकूब 1:1; 5:14)। यरूशलेम की कलीसिया में पहले प्राचीनों को शायद पुराने नियम के समय के पुरुषों के उसी वर्ग में चुना गया था, अर्थात्, परिवारों के प्रमुखों और इस्राएल में प्रभावशाली अन्य पुरुषों में से। वे सबसे अधिक संभवत: विश्वासियों द्वारा चुने गए थे, जैसे कि सेवक चुने गए थे (तुलना करें प्रेरितों के काम 6:1-7)। लूका (प्रेरितों के काम 6:4), पतरस (1 पतरस 5:1) और यूहन्ना (3 यूहन्ना 1) ने यह स्पष्ट किया कि यीशु मसीह के प्रेरित स्थानीय कलीसिया में प्राचीनों के तौर पर काम करते थे। उन्होंने "साथी-प्राचीनों" (1 पतरस 5:1) के रूप में काम किया, न कि अन्य प्राचीनों के ऊपर किसी ऊँचे पद के तौर पर। स्थानीय कलीसिया में प्राचीनों के प्राथमिक कार्य प्रार्थना और वचन की सेवकाई थे (प्रेरितों के काम 6:4)।

3. नए नियम की गैर-यहूदी कलीसिया में प्राचीनों का चुना जाना।

पढ़ें प्रेरितों के काम 14:23; तीतुस 1:5

खोजें और चर्चा करें। नए नियम की गैर-यहूदी कलीसिया के प्राचीन कैसे चुने गए थे?

ध्यान दें। 34 ई. से पहले यहूदी मसीहियों ने (प्रेरितों के काम 8:4; 11:20), प्रेरित पौलुस ने 37 ई. के बाद (प्रेरितों 9:30; 15:12; 14:23) और प्रेरित पतरस ने 40 ई. (प्रेरितों 10) और उनके सह-कर्मियों ने गैर-यहूदी राष्ट्रों के बीच पहली कलीसिया की स्थापना की। आधुनिक मिशनरियों और कलीसिया को बसाने वालों के साथ इसकी तुलना करें। प्रेरितों के लेखन स्पष्ट रूप से सिखाते हैं कि प्राचीनों को कलीसियाओं की अगुवाई करने के लिए चुना गया था (प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5)। नए नियम में एक कलीसिया में कभी भी एक प्राचीन (याजक, अगुवा, पासबान, आदरणीय, शिक्षक इत्यादि) नहीं था, लेकिन हमेशा ही प्राचीनों की एक बहुवचन संख्या में समिति थी जो मण्डली के मामलों को निर्देशित करती थी (1 तीमुथियुस 4:14)। प्राचीन एक दूसरे की जीवनशैली और सेवकाई पर नज़र रखते थे (प्रेरितों के काम 20:28)।

(1) नई कलीसिया में प्राचीनों की नियुक्ति।

स्थापित की गई नई कलीसियाओं में, प्रेरितों और उनके सहकर्मियों (मिशनरी) ने पहले प्राचीनों को नियुक्त किया (प्रेरितों के काम 14:23; तीतुस 1:5)।

(2) स्थापित की गई कलीसियाओं में प्राचीनों की नियुक्ति।

स्थापित की गई कलीसियाओ में, प्राचीनों की मौजूदा समिति ने कलीसिया के सदस्यों की नये प्राचीनों को नियुक्त करने में उनकी अगुवाई की। क्योंकि कलीसिया के सदस्यों ने एक प्रेरित के लिए होने वाले चुनाव प्रस्ताव को बनाने में भाग लिया था (प्रेरितों के काम 1:15-26) वास्तव में सेवकों के चुने जाने में (प्रेरितों के काम 6:1-7), और ऐसा भी लगता है कि उन्होंने प्राचीनों के चुने जाने में भी भाग लिया था। ऐसा पहले पुराने नियम के समय में भी हुआ था (व्यवस्थाविवरण 1:13; गिनती 11:16-17)। हालाँकि, प्राचीनों की मौजूदा समिति ने बाइबल आधारित आवश्यक योग्यताओं और कार्यों पर ध्यान देकर सदस्यों की पसन्द को निर्देशित किया (प्रेरितों के काम 6:2-4)।

(3) फलदायक प्राचीनों की नियुक्ति।

नए नियम में, यह प्रेरित, उनके सहकर्मी और स्थानीय कलीसिया के सदस्य थे जिन्होंने उन लोगों को पहिचाना जिन्हें पहले से ही बढ़ाया गया था और जिन्होंने पवित्र आत्मा द्वारा प्राचीनों के कार्यों को करने की योग्यता प्राप्त की थी (प्रेरितों के काम 20:28), और जिन्होंने अपने जीवन और सेवकाई में इसका प्रमाण दिया था (2 कुरिन्थियों 10:18; लूका 16:10-12)।

- लूका 16:10 में यीशु कहता है, "जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है (एक या छोटी ज़िम्मेदारी), वह बहुत में भी सच्चा है (ज़्यादा या बड़ी ज़िम्मेदारियाँ)।"
- 2 कुरिन्थियों 10:18 में पौलुस कहता है, "क्योंकि जो अपनी बड़ाई करता है, वह नहीं, परन्तु जिस की बड़ाई प्रभु करता है, वही ग्रहण किया जाता है।"

(4) लोकतांत्रिक मतदान द्वारा प्राचीनों की नियुक्ति नहीं।

प्राचीन मतदान (लोकतांत्रिक) द्वारा नहीं चुने गए थे, लेकिन निम्नानुसार चुने गए :

- प्राचीनों के लिए बाइबल की आवश्यकताएँ
- बाइबल के कार्यों को पूरा करने के लिए बाइबल के कौशल
- और किस प्रकार कलीसिया के भीतर उनका जीवन और सेवकाई पहले से ही काम कर रहे हैं और दूसरों के लिए एक आशीष हैं।

उन्हें इन सिद्धान्तों के सम्बन्ध में मण्डली के सदस्यों की सामान्य स्वीकृति और समझौते के साथ चुना गया था और मौजूदा अगुवों द्वारा नियुक्त (शामिल) किया गया था (प्रारम्भ में मिशनरी और बाद में प्राचीनों की मौजूदा समिति)।

प्रेरितों 14:23 में प्राचीनों को "हाथ उठाकर चुना गया" (Greek: cheirotoneó) जैसा कि एथेंस की विधायी सभा में किया गया था। लेकिन "चुने गए" शब्द का अर्थ "लोकतांत्रिक मतदान" (एक व्यक्ति एक वोट) नहीं हो सकता है, क्योंकि केवल पौलुस और बरनबास यहाँ दो विषय थे, जैसे कि केवल प्रेरितों के काम 10:41 में परमेश्वर ही एक विषय था! इस शब्द का अर्थ "नियुक्ति" से कहीं अधिक है। तीतुस 1:5 में शब्द का अर्थ है "एक सेवकाई में प्राचीन की नियुक्ति (Greek: kathistémi)", *इस शब्द में औपचारिक कलीसियाई नियुक्ति नहीं है*, लेकिन एक सेवकाई में नियुक्ति, ज़िम्मेदारी, अधिकार, विश्वास और उत्तरदायित्व के साथ प्रत्येक शहर में कलीसिया के सदस्यों द्वारा पहिचानी जाती है।

4. प्राचीनों की नियुक्ति।

पढ़ें प्रेरितों के काम 14:23; 1 तीमुथियुस 5:22
खोजें और चर्चा करें। नये नियम में प्राचीनों की नियुक्ति किस प्रकार की गई?

ध्यान दें।

(1) प्राचीनों को खरे उपदेश के प्रति ईमानदार होने का वायदा करना चाहिए।

तीतुस 1:9 कहता है : एक प्राचीन "विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे; कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके; और विवादियों का मुँह भी बन्द कर सके।" समस्त मण्डली की उपस्थिति में नई रीति से नियुक्त प्राचीनों पर हाथों को रखने और आशीष की प्रार्थना करने से पहले, प्राचीनों को निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम होना चाहिए :

- क्या आप यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में स्वीकार करते है?
- क्या आप यह विश्वास करते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है और मसीही सिद्धान्त और जीवन के लिए पूर्ण मानक है?
- क्या आप यह विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह ने आपको एक प्राचीन होने के लिए इस सेवकाई में बुलाया है?
- क्या आप अपने काम को ईमानदारी से और यीशु मसीह की निर्भरता में करने का वायदा करते हैं?
- क्या आप स्वयं को प्रभु यीशु मसीह, बाइबल, मण्डली के नियमों या विधियों, प्राचीनों की समिति और यदि आवश्यक हो, तो मण्डली के अनुशासन के प्रति प्रस्तुत करने के इच्छुक हैं?

इन सवालों के सकारात्मक रूप से जवाब देने के लिए प्रत्येक नये नियुक्त प्राचीन को सक्षम होना चाहिए।

(2) प्राचीनों को प्रार्थना और हाथों को रखने के द्वारा परमेश्वर की देखभाल और सुरक्षा को सौंपा जाता है।

हाथों को रखने से आत्मिक वरदान नहीं मिलते, क्योंकि केवल पवित्र आत्मा ही आत्मिक वरदानों को जिसे वह चाहता है उसे देता है (1 कुरिन्थियों 12:11)। हाथों को रखना, अधिकार और आत्मिक वरदानों के हस्तान्तरण का *प्रतीक* है जो उनके उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं (तुलना करें प्रेरितों के काम 6:6; 1 तीमुथियुस 4:14; 2 तीमुथियुस 1:6)। लेकिन बाइबल बिना सोचे-समझे हाथों को रखने (प्राचीनों की नियुक्ति) के विरोध में चेतावनी देती है!

5. प्राचीनों के लिए सेवकाई की अवधि।

पढ़ें प्रेरितों के काम 6:3-6; 8:4-5 और 21:8
खोजें और चर्चा करें। प्रत्येक प्राचीनों की सेवकाई की अवधि कितने समय की होनी चाहिए?

ध्यान दें।

(1) बाइबल

बाइबल बताती है कि प्रेरित पतरस और यूहन्ना यरूशलेम की कलीसिया में अपने पूरे जीवन के लिए प्राचीन नहीं रहे। हालाँकि, बाइबल इस बात का कोई उल्लेख नहीं करती कि कितने समय तक प्राचीन सेवकाई करता रहे। इसलिए, प्रत्येक स्थानीय कलीसिया प्राचीनों की सेवकाई की अवधि के बारे में एक बुद्धिमान निर्णय ले सकती है।

(2) अभ्यासात्मक (प्रेक्टिकल)

हालाँकि, सेवकाई के दुरुपयोग से बचने के लिए, सेवकाई की एक सीमित अवधि की सलाह दी जाती है। यह अभ्यास मण्डली को उन गलत अगुवों से बचाता है जो इस्तीफा नहीं देना चाहते हैं; यह मेहनती प्राचीनों को कुछ समय के लिए आराम करने का अवसर देता है; और यह अन्य विश्वासियों को विभिन्न अगुवाई की क्षमताओं के साथ मण्डली में प्राचीनों के रूप में सेवा करने का अवसर देता है।

कई मण्डलियाँ प्राचीनों की सेवकाई की अवधि को चार वर्ष तक सीमित करती हैं। वर्ष में लगभग एक बार प्राचीनों के विरोध में एक चौथाई मण्डली खड़ी हो जाती है और उनके स्थान पर नये प्राचीनों को चुना और नियुक्त किया जाता है। यह अभ्यास प्राचीनों की समिति के भीतर निरन्तरता की गारंटी देता है। बेशक, ठीक तरह से सेवा करने वाले एक प्राचीन को दूसरे कार्यकाल के लिए फिर से निर्वाचित किया जा सकता है।

घ. प्राचीनों के विषय में अन्य मुख्य बातें

1. प्राचीनों का विशेष सम्मान और आर्थिक सहायता।

पढ़ें 1 तीमुथियुस 5:17-18; 1 कुरिन्थियों 9:14; गलातियों 6:6; 1 थिस्सलुनिकियों 5:12-13

खोजें और चर्चा करें। नये नियम में प्राचीनों के विशेष सम्मान और आर्थिक सहायता के बारे में क्या सिखाया?

ध्यान दें।

(1) प्राचीन आर्थिक सहायता की मांग नहीं कर सकते हैं।

बाइबल सिखाती है कि "जो प्राचीन कलीसिया के मामलों को अच्छी तरह से निर्देशित करते हैं, वे दोहरे सम्मान के योग्य हैं, विशेषत: उनके, जिनके काम प्रचार और शिक्षा देने के हैं"। इसका मतलब है कि उन्हें न केवल सम्मान मिलना चाहिए, बल्कि यदि आवश्यक हो तो आर्थिक सहायता प्राप्त करने का अधिकार भी होना चाहिए। हालाँकि, कोई भी प्राचीन (पासबान) आर्थिक सहायता की मांग नहीं सकता, क्योंकि उसे स्वेच्छा से सेवकाई करनी चाहिए और धन के लिए लालची नहीं होना चाहिए (1 पतरस 5:2)। प्राचीनों और पूर्णकालिक प्राचीनों को जिन्हें अपनी स्वयं की सहायता के लिए कमाने से मुक्त किया गया है, उन्हें स्वेच्छा से और स्वयंसेवक होकर धन के लालच के बिना कलीसिया की सेवा करनी चाहिए।

(2) उन प्राचीनों को आर्थिक सहायता देनी चाहिए जो अपना काम भली रीति से करते हैं।

फिर भी, एक कलीसिया को एक ऐसे प्राचीन की सहायता करनी चाहिए जो अपना काम "भली रीति" से कर रहा है और उसे सहयोग की आवश्यकता है (1 कुरिन्थियों 9:14; गलतियों 6:6)। हालाँकि, एक तरफ 1 तीमुथियुस 5:17-18 पूर्णकालिक प्राचीनों (पासबानों, याजकों, आदरणीयों, अगुवों) और सह-प्राचीनों के बीच आधुनिक विभिन्नता को न्यायसंगत नहीं ठहराता, जिन्होंने थियोलॉजिकल सेमिनरी या बाइबल स्कूल में शिक्षा प्राप्त की है और इसलिए उन्हें उच्च दर्जा (पद) (वेतन) मिलता है और दूसरी तरफ उन प्राचीनों को जिन्हें ऐसी शिक्षा नहीं मिली है! बाइबल का यह पद्य उन प्राचीनों (पासबानों, कलीसिया के अगुवों सहित) के बीच अन्तर को दर्शाता है जो अपना काम "भली रीति" (sic!) से करते हैं और वे प्राचीन (पासबानों, कलीसिया के अगुवों सहित) जो अपना काम भली रीति से नहीं करते! जो लोग अपना काम भली रीति से करते हैं, केवल वे ही सहयोग या सहायता पाने का अधिकार रखते हैं। लेकिन भले ही उन्हें सहयोग पाने का अधिकार हो, फिर भी वे कलीसिया से सहायता नहीं मांग सकते, क्योंकि उन्हें अपनी सहायता के लिए मसीह पर निर्भर होना चाहिए, न कि लोगों पर (याकूब 1:17)।

2. प्राचीनों के अधिकार।

पढ़ें 1 थिस्सलुनिकियों 5:12-13; इब्रानियों 13:7,17; 1 पतरस 5:1-6

खोजें और चर्चा करें। नया नियम हमें प्राचीनों के अधिकार के बारे में क्या सिखाता हैं?

ध्यान दें।

(1) प्राचीनों को अधिकार परमेश्वर की ओर से मिलता है।

सभी सात अधिकार-अधीनता सम्बन्धित सम्बन्ध परमेश्वर द्वारा बनाए गए हैं। वह व्यक्ति जो इस तरह के अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर का विरोध करता है और परमेश्वर के न्याय को अपने ऊपर लाता है (रोमियों 13:1-2)।

कलीसिया के सदस्यों को प्राचीनों की आज्ञा का पालन करना चाहिए, लेकिन केवल उनके कार्य क्षेत्र में (1 थिस्सलुनीकियों 5:12-13; इब्रानियों 13:17)।

(2) प्राचीनों के अधिकार सीमित हैं।

बाइबल में अधिकार के साथ सात शिक्षाएँ भी हैं :

- परमेश्वर का प्रत्येक वस्तु पर पूर्ण अधिकार है (प्रकाशितवाक्य 1:5; 19:16)।
- मनुष्य को सारी सृष्टि पर अधिकार है (उत्पत्ति 1:28)।
- विवाह के क्षेत्र में पुरूषों का महिलाओं पर (इफिसियों 5:22-24) और कलीसिया पर अधिकार है (1 तीमुथियुस 2:11-12; 1 कुरिन्थियों 14:33-36)।
- माता-पिता के पास अपने बच्चों पर अधिकार होता है (इफिसियों 6:1-4)।
- सरकार का नागरिकों पर अधिकार है (रोमियों 13:1-7)।
- मालिकों (नियोक्ताओं) का अपने कर्मचारियों पर अधिकार है (इफिसियों 6:5-9)।
- प्राचीनों को कलीसिया के सदस्यों पर अधिकार है (1 थिस्सलुनिकियों 5:12-13; इब्रानियों 13:7,17)।

परमेश्वर के अलावा, अधिकार की सभी शिक्षाएँ सीमित हैं (यशायाह 9:6; फिलिप्पियों 2:9-11)। प्राचीनों को परमेश्वर की ओर से अधिकार प्राप्त हुआ है, लेकिन केवल उनके बाइबल कार्य-क्षेत्रों के लिए। वास्तव में एक प्राचीन का अधिकार इस बात पर निर्भर करता है कि वह कैसे रहता है, उसका विश्वास और उसके वचन की सेवकाई कैसी है (इब्रानियों 13:7)। कलीसिया के सदस्य उस प्राचीन (पासबान, कलीसिया का अगुवा) की आज्ञा का पालन नहीं कर सकते हैं जो अपने अधिकार का दुरुपयोग करता हो (2 यूहन्ना 1:10-11; प्रेरितों के काम 4:19-20; प्रेरितों के काम 5:29)!

बचाने का (छुड़ाने का) (यूहन्ना 3:17), बदलने का (2 कुरिंथियों 3:18), उपयोग करने का (प्रेरितों 9:15), और आशीष देने का (यूहन्ना 15:5) अधिकार केवल उन लोगों के पास है, जो यीशु मसीह से सम्बन्ध रखते हैं! इसी प्रकार, वचन के माध्यम से लोगों के मार्गदर्शन करने का (भजन 119:105; इफिसियों 6:17) और आत्मा (यूहन्ना 16:13), आत्मिक वरदान देने का (1 कुरिन्थियों 12:11), मण्डली के भीतर और विश्वव्यापी कलीसिया में विशिष्ट कार्यों को सौंपने का (मरकुस 13:34; 1 कुरिन्थियों 3:5-6), और विशिष्ट सेवकाई की बुलाहट का अधिकार (गलतियों 2: 8-9), अंतत: यीशु मसीह के पास है, न कि प्राचीनों के पास।

प्राचीनों की समिति किसी भी विश्वासी से यह कह सकती है कि वह प्रार्थना के साथ मण्डली में काम करने पर विचार करे, लेकिन उसे विवश नहीं कर सकती या उसे उसकी इच्छा के बिना नियुक्त नहीं कर सकती। लेकिन कलीसिया के भीतर सभी सदस्यों को प्राचीनों की समिति के तहत अपनी विशेष बुलाहट और कार्य को पूरा करना चाहिए।

3. प्राचीनों की जवाबदेही (लेखा देना) व उत्तरदायित्व।

पढ़ें प्रेरितों के काम 14:27; 20:28; 1 तीमुथियुस 5:19-22; इब्रानियों 13:17
खोजें और चर्चा करें। नया नियम हमें प्राचीनों की जवाबदेही और उत्तरदायित्व के बारे में क्या सिखाता है?
ध्यान दें।

(1) प्राचीनों का निम्न बातों के प्रति उत्तरदायित्व :

- वे परमेश्वर के साथ कैसे चलते हैं (उत्पत्ति 5:22; भजन 16:8; भजन 27:4; परमेश्वर के वचन पर विश्वास और उसका पालन करो (प्रेरितों 13:22)
- वे अपने परिवार, कलीसिया और समाज में कैसे व्यवहार करते हैं
- वे अपने परमेश्वर द्वारा दिए गए कार्यों को चरवाहे (रखवाले), प्रबन्धक, शिक्षक और सेवक के रूप में किस प्रकार करते हैं।

(2) प्राचीनों की निम्न बातों के प्रति जवाबदेही :

- यीशु मसीह के प्रति (इब्रानियों 13:17)
- प्राचीनों की समिति में एक-दूसरे के प्रति (प्रेरितों 20:28)
- कलीसिया की आम बैठक द्वारा दिए गए कार्यों के सम्बन्ध में पूरी मण्डली के प्रति (प्रेरितों के काम 14:27)।

प्राचीन, जो पाप करते हैं, उन्हें अनुशासित होना चाहिए (1 तीमुथियुस 5:19-20)।

4. प्राचीनों की प्राथमिकताएँ।

पढ़ें नीतिवचन 23:4-5; सभोपदेशक 3:1; 8:5-6; यूहन्ना 15:5; 1 तीमुथियुस 3:4-5; तीतुस 1:6
खोजें और चर्चा करें। प्राथमिकताओं और व्यवस्था के विषय में क्या?

ध्यान दें।

(1) प्राचीनों की प्राथमिकताएँ होनी चाहिए और उन्हें उनके साथ ही रहना चाहिए।

बाइबल सिखाती है कि सब बातो के लिए एक समय है। कलीसिया के उत्तरदायित्व की तुलना में प्राचीनों के उत्तरदायित्व कहीं ज़्यादा हैं। यीशु मसीह की सहभागिता में रहकर और सीखने की उनका व्यक्तिगत उत्तरदायित्व है। उनके पास अपनी जीविका को कमाने का उत्तरदायित्व है, लेकिन अतिरिक्त समय में काम करने या धन कमाने के अलावा। उनके पास अपने परिवारों का भली रीति से प्रबन्ध करने का व्यक्तिगत उत्तरदायित्व है। कलीसिया के भीतर प्राचीनों के काम कभी अधिक समय न लें या उन पर बोझ न बनें जिससे कि प्राचीन परमेश्वर द्वारा दिए गए उत्तरदायित्व को नजरअंदाज न करने पाए! इसके अलावा, प्राचीनों को एक दूसरे के जीवन की ओर देखना चाहिए (प्रेरितों के काम 20:28) और यदि कोई प्राचीन काम नहीं कर रहा है, जैसा कि उसे करना चाहिए तो उसकी सहायता करनी या उससे उसका इस्तीफा ले लेना चाहिए। यदि वह इस्तीफा देने से इंकार कर देता है, तो उसे हटा (निकाल) देना चाहिए।

(2) प्राचीनों को यह देखना चाहिए कि सब कुछ व्यवस्थित तरीके से किया जा रहा है।

प्राचीनों को कलीसिया की अगुवाई करनी इस प्रकार सिखायी जाती है ताकि कलीसिया में परमेश्वर द्वारा दिए गए सभी कार्यों को पर्याप्त रूप से और व्यवस्थित तरीके से किया जा सके (1 कुरिन्थियों 14:40)। प्राचीनों की समिति में मुख्य रूप से सह प्राचीन होते हैं, लेकिन उनमें से एक या दो पूर्णकालिक प्राचीनों के रूप में कार्य कर सकते हैं। बाइबल उनकी योग्यता और कार्यों को निर्धारित करती है। सभी प्राचीन, सदस्यों के चरवाहे (पासबान), कलीसिया के भीतर गतिविधियों के निदेशकों/प्रबंधकों और परमेश्वर के वचन के प्रचारकों और शिक्षकों के उत्तरदायित्व को साझा करते हैं। सेवकाई की अवधि को सीमित करने के लिए प्राचीनों के उत्तरदायित्व और कार्यों को सीमित करना बुद्धिमानी है और यह देखा जाए कि वे फिर से नियुक्त होने से पहले कुछ वर्ष और ले लें।

ङ. सेवकों (डीकन्स) की नियुक्ति

नए नियम के अनुसार हर स्थानीय कलीसिया को सेवकों (डीकन्स) की आवश्यकता नहीं होती है (तुलना करें नियमावली 4, परिशिष्ट 20)।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रिया]* **परमेश्वर के वचन के प्रति आपकी प्रार्थना**

आज जो कुछ आपने सीखा है, उसके लिए ***समूह में एक-एक करके परमेश्वर से प्रार्थना करें।***

या समूह को दो या तीन में विभाजित करें और आज जो कुछ आपने सीखा है उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*[निर्धारित कार्य]* **दूसरे अध्याय के लिए कार्य**

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि बनाने दें)।

1. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "कलीसियाई अगुवों की नियुक्ति" पर प्रचार करें, शिक्षा दें और अध्ययन करें।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **फिलिप्पियों 3 - 4 और कुलुस्सियों 1 - 2** के अध्यायों को आधा प्रतिदिन पढ़ने के लिए शान्त समय चुन लें। पसन्दीदा सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।
4. याद करना। **श्रृंखला च (F) की समीक्षा करें : "मसीही विवाह के लिए तैयारी"।**
   (1) दोनों विश्वासी (2 कुरिंथियों 6:14); (2) एक ही जीवन-लक्ष्य (आमोस 3: 3); (3) आत्म-नियंत्रण (1 थिस्सलुनिकियों 4: 3-5); (4) सही समय (उपदेशक 8: 5ब-6अ); (5) सही प्राथमिकताएँ (मत्ती 6:33)।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें (**यूहन्ना 7)।** बाइबल अध्ययन की पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी और व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर किस प्रकार कार्य करता है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।